



मॉक इंटरव्यू वपुल कुमार

उम्मीदवार का परिचय

नाम: वपुल कुमार
पति का नाम: महेन्द्र प्रसाद
माता का नाम: शारदा देवी
जन्म स्थान: उज्जैन (मध्य प्रदेश)
जन्म तिथि: 20 अक्टूबर, 1987
वर्ग: सामान्य

शैक्षणिक योग्यता:

- हाईस्कूल: सेंट मैरी कॉन्वेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, उज्जैन (79.5%)
- इंटरमीडिएट: राजकीय इंटर कॉलेज, उज्जैन
- स्नातक: अमटि इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी, दिल्ली (76%; कम्प्यूटर साइंस)

वैकल्पिक विषय: भूगोल

माध्यम: हिंदी

प्रयास: चतुर्थ

रुचि: फिलिम देखना

सेवा संबंधी वरीयताएँ: IAS, IPS, IFS, IRS, IC & ES, IRTS, IRAS

राज्य संबंधी वरीयताएँ: मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, ओडिशा, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु, तेलंगाना, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, असम- मेघालय, मणिपुर-त्रिपुरा, नागालैंड।

वपुल कुमार मध्य प्रदेश के उज्जैन ज़िले के रहने वाले हैं। एक मध्यमवर्गीय परिवार से संबंधित होने के कारण वपुल को अपने जीवन में किसी विशेष आर्थिक-सामाजिक समस्या का सामना तो नहीं करना पड़ा और बचपन से ही अच्छी शिक्षा एवं सुवधाओं का लाभ उसे प्राप्त हुआ। परंतु पारंपरिक बज़िनेस को छोड़कर सविलि सेवा की तैयारी के क्षेत्र में आना उसके लिये बलिकुल एक नया अनुभव था। हालाँकि तैयारी के शुरुआती दौर में वह मार्ग से वचिलति भी हुआ और अपने जीवन के कुछ बहुमूल्य क्षण भी गवाँए। परन्तु सविलि सेवा परीक्षा की लगातार तीन असफलताओं ने उसे बहुत बड़ी सीख दी और अगले प्रयास में अपने अथक परिश्रम की बदौलत वह इंटरव्यू तक पहुँचने में सफल हुआ। परसतुत हैं वपुल के साक्षात्कार के प्रमुख अंश:

साक्षात्कार

(इंटरव्यू बोर्ड के सदस्य बैठे हुए आपस में बातें कर रहे हैं। उनके बैठने की व्यवस्था ऐसी है कि प्रवेश द्वार से ही सीधी दृष्टि उन्हीं पर पड़ती है।)

(सुरक्षा गार्ड के दरवाज़ा खोलने के पश्चात् वपुल बाहर से ही बोर्ड सदस्यों का अभिवादन करता है।)

वपुल: गुड मॉर्निंग सर... मे आई कम इन?

बोर्ड अध्यक्ष: यस कम!..... बैठिये।

वपुल: थैक्यू सर (कुरसी को थोड़ा पीछे खसिकाकर बैठ जाता है।)

बोर्ड अध्यक्ष: कैसे हैं?

वपुल: बढ़िया हूँ सर।

बोर्ड अध्यक्ष: (वपुल के कपड़े को देखते हुए)... बाहर मौसम सही नहीं है क्या?... आपने बलेज़र चढ़ा रखे हैं... गर्मी नहीं लगती आपको?

वपुल: ऐसा नहीं है सर... दरअसल मैं बलेज़र में अधिक कॉन्फर्ट महसूस करता हूँ इसलिये...

बोर्ड अध्यक्ष: अच्छा... इसका क्या मनोवैज्ञानिक कारण हो सकता है?

वपुल: मुझे लगता है कि शायद थोड़े चुस्त कपड़े पहनने से शरीर में एक हल्का-सा कसाव महसूस होता है जिससे व्यक्ति सक्रिय रहता है और उसका कॉन्फर्टिस लेवल अच्छा रहता है।

बोर्ड अध्यक्ष: आपने सूफ़ी फकीरों के या साधु संतों के वस्त्र देखे हैं... बिल्कुल ढीले-ढाले से... इसका मतलब क्या वे नॉन कॉन्फर्टिन्ट हैं?

वपुल: एकचयुअली सर... मेरे कहने का मतलब यह नहीं था... मैं कहना चाहता था कि शायद चुस्त कपड़ों में अपेक्षाकृत अधिक सक्रियता महसूस होती है।

बोर्ड अध्यक्ष: यह आपका परसनल परसेप्शन भी तो हो सकता है।

वपुल: बिल्कुल सर... मैं भी यही कहना चाहता हूँ कि इस बारे में केवल अपने अनुभवों के आधार पर व्याख्या दे सकता हूँ क्योंकि मैंने कहीं ऐसा पढ़ा नहीं है।

बोर्ड अध्यक्ष: तो फरि आप किस आधार पर इतने कॉन्फर्टिस के साथ एक्सप्लेनेशन दे रहे थे... ये भी बलेज़र का ही असर था क्या?

(सारे सदस्य हँसते हैं)

(वपुल को घबराहट-सी महसूस हो रही है।)

वपुल: सॉरी सर।

बोर्ड अध्यक्ष: इट्स ओके... कोई बात नहीं... आप कहाँ से हैं?

वपुल: जी, मध्य प्रदेश के उज्जैन ज़िले से।

बोर्ड अध्यक्ष: अच्छा, आप उज्जैन से हैं... सुना है कि उज्जैन बेहद सुन्दर शहर है।

वपुल: जी सर।

बोर्ड अध्यक्ष: कालीदास ने अपनी एक रचना में उज्जैन का सुन्दर वर्णन किया है। आपको पता है वह रचना कौन-सी है?

वपुल: जी, मेघदूतम्।

बोर्ड अध्यक्ष: आपने मेघदूतम् पढ़ी है?

वपुल: नहीं सर... बस इतना पढ़ा है कि कालीदास ने मेघदूतम् में उज्जैन का सुन्दर वर्णन किया है।

बोर्ड अध्यक्ष: उज्जैन की किसी वर्तमान उपलब्धिका के बारे में बताइये?

वपुल: हाल ही में मध्य प्रदेश सरकार ने शिक्षा के विकास के लिये एक बड़ा प्रोजेक्ट पास किया है जिसमें उज्जैन शहर के नज्द 1200 एकड़ में एक विक्रमादित्य नॉलेज सिटी बनाया जाएगा। इससे उज्जैन के विकास में अत्यधिक मदद मिलेगी। यह प्रोजेक्ट भारत सरकार की दलिली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरीडोर प्रोजेक्ट का एक हिस्सा है।

बोर्ड अध्यक्ष: ये दलिली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरीडोर प्रोजेक्ट क्या है?

वपुल: यह एक विशाल औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करने की भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है जिससे इंफ्रास्ट्रक्चर और इंडस्ट्री का व्यापक स्तर पर डेवलपमेंट होगा तथा ट्रांसपोर्टेशन की सुविधा में भी वसितार होगा।

बोर्ड अध्यक्ष: यह कॉरीडोर कनि राज्यों से होकर गुज़रेगी?

वपुल: जी, यह सात राज्यों दल्लिी, यू.पी., हरयाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश से होकर गुज़रेगी ।

बोर्ड अध्यक्ष: भारत का सबसे बड़ा कॉरीडोर प्रोजेक्ट कौन-सा है?

वपुल: नॉर्थ-साउथ-ईस्ट-वेस्ट कॉरीडोर प्रोजेक्ट ।

बोर्ड अध्यक्ष: इसमें कतिने किलोमीटर हाइवे बनाने की योजना है?

वपुल: (सोचते हुए)... सॉरी सर... मुझे याद नहीं आ रहा ।

बोर्ड अध्यक्ष: गोल्डन क्वाडलैटरल के बारे में जानते हैं?

वपुल: जी सर ।

बोर्ड अध्यक्ष: क्या है गोल्डन क्वाडलैटरल?

वपुल: यह भारत का एक प्रमुख हाइवे नेटवर्क है जो भारत के चारों महानगरों चेन्नई, कोलकाता, दल्लिी एवं मुंबई को जोड़ता है ।

बोर्ड अध्यक्ष: यहाँ क्वाडलैटरल का क्या अर्थ है?

वपुल: सर, दरअसल यह हाइवे नेटवर्क चौकोर आकार में है इसलिये इसका नाम गोल्डन क्वाडलैटरल रखा गया है ।

बोर्ड अध्यक्ष: गुड... ।

(बोर्ड अध्यक्ष संतुष्ट नज़र आ रहे हैं । वे दायीं ओर बैठे प्रथम सदस्य को सवाल पूछने के लिये इशारा करते हैं ।)

प्रथम सदस्य: वपुल जी... आप अपने व्यक्तित्व को कैसे परभाषति करेंगे?

(शायद वपुल प्रश्न समझ नहीं पा रहा है ।)

वपुल: सॉरी सर...

प्रथम सदस्य: आपके व्यक्तित्व की क्या वशिषताएँ हैं?

वपुल: सर, मैं किसी भी चीज़ के बारे में नगिटिवि नहीं सोचता... हमेशा पॉज़िटिवि रहने की कोशशि करता हूँ ।

प्रथम सदस्य: ये भी तो गलत है... जो चीज़ें गलत हैं उन्हें गलत क्यों न समझा जाए... ये तो सावन के अंधे की तरह है ।

वपुल: सर, मेरा मतलब था कि मैं अपनी मनःस्थिति को सकारात्मक रखने का प्रयास करता हूँ और हरेक कार्य को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न करता हूँ ।

प्रथम सदस्य: वही तो मैं भी कह रहा हूँ... नकारात्मक चीज़ों को नकारात्मक क्यों न समझा जाए... शत्रुमूर्ग की तरह रेत में सर छुपाने से समस्या तो खत्म नहीं हो जाती । इससे तो बेहतर है आँखें खोलकर नकारात्मकता का भी सामना कया जाए जिससे कउसे सुधारा जा सके ।

वपुल: जी... यस सर... (सोचते हुए)... आप शायद सही कह रहे हैं सर ।

प्रथम सदस्य: क्या सही कह रहा हूँ... यू हैवेन्ट कॉन्फिडेंस... एनीवन कैन चैज़ योर परसेप्शन्स इज़लिली ।

वपुल: सॉरी सर (वपुल के चेहरे पर घबराहट स्पष्ट नज़र आ रही है ।)

प्रथम सदस्य: इट्स ओके... अगर आपको अपने आप में एक बदलाव करना पड़े तो आप क्या बदलाव करेंगे?

वपुल: एकचयुली सर... मैं अपने आपको बदलना नहीं चाहता... मैं जैसा हूँ, वैसा ही रहना चाहता हूँ ।

प्रथम सदस्य: क्या?

(वपुल घबरा जाता है ।)

वपुल: स...स... साँरी सर ।

प्रथम सदस्य: साँरी कसिलयि? हाँ, बताइये क्या बोल रहे थे?

वपुल: सर, मेरी जो कमज़ोरी है... मैं उसे दूर करना चाहूंगा ।

प्रथम सदस्य: क्या है आपकी कमज़ोरी?

वपुल: शायद, आत्मवश्वास की कमी ।

प्रथम सदस्य: (मुस्कुराते हुए)... इसमें भी शायद...

वपुल: साँरी सर ।

प्रथम सदस्य: (नाराज़गी में)... अरे, कतिना साँरी बोलेंगे आप । आप तो सामने वाले को भी दुःखी कर देंगे । (नॉर्मल होकर) इतना साँरी भी अच्छा नहीं होता ।

वपुल: स...स... साँरी...

(सारे सदस्य हँसने लगते हैं ।)

प्रथम सदस्य: आपके लयि पैसे और पद में क्या महत्त्वपूरण है?

वपुल: सर... महत्त्वपूरण तो दोनों ही हैं ।

प्रथम सदस्य: लेकिन, दोनों में अगर चुनना पड़े?

वपुल: मैं पद को अधिक महत्त्व दूंगा ।

प्रथम सदस्य: क्यों?

वपुल: क्योंकि मैं देश और समाज के लयि जो करना चाहता हूँ वह केवल पैसों से नहीं हो सकता और पद में रहने के बाद तो पैसे स्वतः ही आएंगे ।

प्रथम सदस्य: क्या करना चाहते हैं आप देश के लयि?

वपुल: सर, आज भी हमारे समाज में कई लोग जानवरों से भी बदतर ज़िदगी बसर करने को मज़बूर हैं । मैं उनके लयि कुछ करना चाहता हूँ । अशिक्षा, गरीबी, भ्रष्टाचार जैसी कई समस्याएँ हमारे समाज में व्याप्त हैं, मैं उन्हें दूर करना चाहता हूँ और इसके लयि पद ज़रूरी है सर ।

प्रथम सदस्य: पद पाने के बाद क्या करेंगे आप इनके लयि?

वपुल: सर, मैं जसि क्षेत्र में रहूंगा, कम-से-कम उस क्षेत्र में शिक्षा की स्थिति सुदृढ़ करने की कोशिश करूंगा । भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने का प्रयत्न करूंगा । इसके अलावा यह भी प्रयत्न करूंगा कियोजनाओं का लाभ ज़रूरतमंदों तक पहुँच सके ।

प्रथम सदस्य: क्या इतना पर्याप्त है समाज की समस्याओं को दूर करने के लयि?

वपुल: नहीं सर... इसके अलावा व्यक्तिगत तौर पर भी मैं प्रयास करूंगा ।

प्रथम सदस्य: क्या प्रयास करेंगे... एनजीओ चलाएंगे?

वपुल: जी सर... कुछ इसी प्रकार का...

(प्रथम सदस्य दायीं ओर बैठी महिला सदस्य से प्रश्न पूछने के लयि नविदन करते हैं ।)

महिला सदस्य: वपुल जी... आपको पता तो होगा कि एनजीओ के नाम पर कई संगठन अपराधिक गतिविधियों में संलग्न हैं तो कई ने इसे ब्लैक मनी को व्हाइट मनी में बदलने का ज़रिया भी बना लिया है । इनमें से कई पर एफसीआरए के उल्लंघन के भी आरोप हैं । ऐसे में क्या एनजीओ को समाज सेवा करने का सही ज़रिया माना जा सकता है?

वपुल: मैम, आप बलिकूल सही कह रही हैं । परंतु कुछ संगठनों की वज़ह से सारे समाजसेवी संगठनों की नीयत पर सवाल उठाना भी तो सही नहीं है ।

महिला सदस्य: कौन से संगठन सही हैं और कौन गलत, इसका फैसला कौन करेगा?

वपुल: इसके लिये सरकार द्वारा कुछ मानक निर्धारित कर इसकी वधिवित जाँच कराई जा सकती है। इसके लिये खुफिया एजेंसियों की भी मदद ली जा सकती है और इस प्रकार गलत कार्यों में संलग्न संगठनों को चिह्नित कर उनका पंजीकरण रद्द किया जा सकता है।

महिला सदस्य: गुड... आपने बी.टेक. किया हुआ है, कोशिश करते तो ठीक-ठाक जॉब भी मलि सकती थी। फरि आप आई.ए.एस. के प्रतियों आकर्षित हुए?

वपुल: मैम, सच तो यह है कि मैं इस पद की गरमि और प्रतषिठा को देखकर ही इसके प्रत आकर्षित हुआ। मेरे गाँव के एक व्यक्ति आई.ए.एस. हैं, उनका सम्मान और उनके व्यक्तित्व ने मुझे बहुत आकर्षित किया। आस-पास के पूरे क्षेत्र में उनका बहुत सम्मान है। इसके अलावा जतिना मैं समाज को समझ पाया, मुझे लगा कि समाज की खातरि कुछ करने के लिये पद भी जरूरी है।

महिला सदस्य: ऐसा क्या है... कई लोग हैं जो बनिा पद के समाज की सेवा कर रहे हैं?

वपुल: हाँ... परंतु... परंतु सम्मान एवं प्रतषिठा...

महिला सदस्य: (बीच में ही बात काटकर) सच तो ये है कि आपको समाज और देश से कोई विशेष मतलब नहीं है। आप बस केवल प्रतषिठा पाने के लिये आई.ए.एस. बनना चाहते हैं। आप केवल पड़ोसियों को दखिाने के लिये आई.ए.एस. बनना चाहते हैं।

(वपुल घबराहट महसूस कर रहा है।)

वपुल: सॉरी मैम... ऐसा नहीं है... दरअसल मैं सही ढंग से अपनी बात नहीं रख पाया।

महिला सदस्य: कोई बात नहीं... आप पर कोई दबाव नहीं है। आप आराम से अपनी बात रख सकते हैं।

वपुल: दरअसल, मेरे कहने का अर्थ था कि मेरे मन में प्रतषिठा की इच्छा तो है ही परंतु यह प्राथमिक नहीं है। प्राथमिक इच्छा समाज के लिये कार्य करना ही है।

महिला सदस्य: ओके... आपकी नज़र में प्रतषिठा का क्या अर्थ है?

वपुल: जनिहें लोग महत्त्व दें, वही प्रतषिठा है।

महिला सदस्य: महत्त्व तो कई कारणों से दिया जा सकता है, डर से भी महत्त्व दिया जाता है। बड़े-बड़े गुंडों को लोग सलाम करते हैं। क्या यह प्रतषिठा है?

वपुल: नहीं मैम... जनिहें लोग अच्छे कृत्यों के कारण सम्मान दें, वह प्रतषिठा है।

महिला सदस्य: तो फरि इसमें पद का क्या रोल है?

वपुल: मैम, पद से भी प्रतषिठा मलिती है।

महिला सदस्य: वही तो पूछ रही हूँ... कैसे?

वपुल: मैम, वभिन्न समाजों में प्रतषिठा के अलग-अलग मायने होते हैं। यह उनकी आर्थिक-सामाजिक परसिथितियों पर निर्भर करता है। जैसे किसी समाज में नौकरी की बजाय व्यापार को अधिक महत्त्व दिया जाता है। उसी तरह हमारे सामाजिक माहौल में पद की प्रतषिठा है।

महिला सदस्य: गुड... (अगले सदस्य को प्रश्न पूछने के लिये इशारा करती हैं।)

तृतीय सदस्य: आपका ऑप्शनल सबजेक्ट ज्योग्राफी है?

वपुल: जी सर।

तृतीय सदस्य: भूगोल और भू-वजिज्ञान में क्या अंतर है?

वपुल: भूगोल एक वसितृत अवधारणा है जिसके अंतर्गत पृथ्वी के स्वरूप, प्राकृतिक वभिग, आकाशीय पण्डि, जीव-जन्तु, वनस्पति आदि समपूरण क्षेत्र का अध्ययन किया जाता है जबकि भू-वजिज्ञान भूगोल की एक शाखा है जिसमें पृथ्वी की संरचना तथा संगठन आदिका अध्ययन किया जाता है।

तृतीय सदस्य: ज्योग्राफी मानविकी का वषिय है अथवा नहीं? अगर है, तो कैसे और अगर नहीं है तो क्यों?

वपुल: (सोचते हुए)... सर, जहाँ तक मेरा अनुमान है कि ज्योग्राफी मानविकी का वषिय नहीं है क्योंकि इसका अध्ययन मूल रूप से वजिज्ञान पर आधारित है।

तृतीय सदस्य: अच्छा!... फरि सोशल ज्योग्राफी, ह्यूमैन ज्योग्राफी आदि के अध्ययन में कौन-से वजिज्ञान की ज़रूरत पड़ती है?

वपुल: (सोच में पड़ जाता है)... पता नहीं, सर... सॉरी। वैसे मुझे लगता है कि दरअसल भूगोल आंशिक रूप से मानविकी का वषिय है क्योंकि इसके कुछ भाग वशिद्ध रूप से वैज्ञानिक अध्ययन की मांग करते हैं तो कुछ मानविकी पर आधारित हैं।

तृतीय सदस्य: गुड... क्या भूगोल को पूर्ण रूप से मानविकी के वषिय की श्रेणी में रखा जाना चाहिये?

वपुल: मुझे तो लगता है कि भूगोल न तो पूर्ण रूप से मानविकी का वषिय है और न ही वजिज्ञान का। इसलिये इसे किसी एक स्ट्रीम में रखना भी सही नहीं है। इसे आंशिक रूप से क्रमशः मानविकी एवं वजिज्ञान में शामिल किया जाना चाहिये।

तृतीय सदस्य: एथिकल ज्योग्राफी क्या है?

वपुल: सॉरी सर, इसका उत्तर एक्ज़ेक्टली तो मुझे नहीं पता। परंतु मुझे लगता है कि शायद रीत-रिवाजों, परंपराओं, नैतिक नियमों एवं मानवीय चरित्र की वशिषताओं आदि का वर्णन करने वाली भौगोलिक शाखा को ही एथिकल ज्योग्राफी कहा जाता होगा।

तृतीय सदस्य: (मुस्कराते हुए) गुड... आपके लिये सफलता का क्या अर्थ है?

वपुल: मुझे लगता है सर, इसका कोई वस्तुनिष्ठ उत्तर नहीं दिया जा सकता क्योंकि कई बार लोग लक्ष्य को प्राप्त करके भी सफल नहीं होते।

तृतीय सदस्य: फरि भी... आप सफलता के बारे में क्या खयाल रखते हैं?

वपुल: सर, ये मेरा कोई मौलिक वचिर तो नहीं परंतु मैं इससे इत्तेफाक रखता हूँ कि सफलता कोई पड़ाव नहीं बल्कि सफलता एक सतत यात्रा है। अगर आप सतत रूप से सफल हैं तो आप सफल हैं।

तृतीय सदस्य: वेरी गुड... और असफलता क्या है?

वपुल: सफलता के प्राप्त न होने की स्थिति असफलता है।

तृतीय सदस्य: ये क्या बात हुई? आपके अनुसार जो व्यक्ति सतत रूप से सफल नहीं है वह असफल है। इस तरह तो दुनिया का हरेक व्यक्ति असफल है।

वपुल: नहीं, सर... मेरे कहने का अर्थ था कि जब व्यक्ति अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो पाता तो वह असफल है।

तृतीय सदस्य: आपने घुमा-फरि कर फरि वही बात कह दी। अच्छा छोड़िये... सफलता और असफलता में क्या संबंध है?

वपुल: मेरे अनुसार सफलता और असफलता एक-दूसरे के वपिरीत नहीं हैं बल्कि अलग-अलग फेज़ हैं। असफलता कई बार सफलता तक पहुँचाने का भी कार्य करती है।

तृतीय सदस्य: वेरी गुड (तृतीय सदस्य संतुष्ट नज़र आ रहे हैं। वे अगले सदस्य को सवाल पूछने के लिये इशारा करते हैं।)

चतुर्थ सदस्य: अभी आप सफलता-असफलता की बात कर रहे थे। अगर आपको सफलता एवं ईमानदारी में से किसी एक को चुनना पड़े तो आप क्या चुनेंगे?

वपुल: ईमानदारी।

चतुर्थ सदस्य: अगर आपको ईमानदारी से थोड़ा-सा समझौता करने भर से सफलता मिल जा रही हो फरि भी सफलता को टुकरा देंगे जबकि आपको यह भी पता हो कि इसके बाद सफलता मिलनी काफी मुश्किल है।

वपुल: मैं पहले परस्थितियों को समझूंगा। अगर ईमानदारी से समझौता करने से किसी को बड़ी हानि अथवा कष्ट होता है तो मैं खुशी-खुशी सफलता को टुकरा दूंगा।

चतुर्थ सदस्य: लगता है आपने बॉलीवुड की काफी फलिमें देखी है... अच्छा, आपकी तो रुचि फलिमें देखना ही है। है न...?

वपुल: (शरमाते हुए)... जी सर।

चतुर्थ सदस्य: कैसी फलिमें पसंद हैं आपको?

वपुल: मैं हर तरह की फलिमें देखता हूँ।

चतुर्थ सदस्य: हॉलीवुड, बॉलीवुड, टॉलीवुड, पॉलीवुड कुछ तो विशेष रूप से पसंद करते होंगे?

वपुल: जी, बॉलीवुड।

चतुर्थ सदस्य: आपको किसी भी फलिम की कौन-सी विशेषता सर्वाधिक आकृष्ट करती है? कहानी, गीत, एक्टिंग....?

वपुल: यूँ तो सर किसी भी फलिम में अगर सारी चीज़ें ठीक अनुपात में हों तो बेस्ट है लेकिन यदि चुनना ही पड़े तो मैं कहानी और एक्टिंग को अधिक महत्त्व देता हूँ।

चतुर्थ सदस्य: अच्छा... आपकी फेवरेट फलिम कौन-सी है?

वपुल: मेरा नाम जोकर।

चतुर्थ सदस्य: अरे, ये तो काफी पुरानी फलिम है और दुःखांत भी। आप तो पॉज़िटिव इनर्जी वाले व्यक्ति हैं, फरि यह दुःखांत फलिम आपको क्यों पसंद है?

वपुल: सर, दरअसल इस फलिम की सारी चीज़ें मुझे पसंद है जैसे कहानी, गीत, संगीत, नरिदेशन, एक्टिंग आदि।

(बीच में ही तृतीय सदस्य बात को काटते हुए पुनः प्रश्न पूछते हैं)

तृतीय सदस्य: 'मेरा नाम जोकर' किस फलिम से प्रेरति है?

वपुल: जी, चार्ली चैप्लिन की 'द सर्कस' से यह प्रेरति है।

तृतीय सदस्य: आपने वह फलिम देखी है?

वपुल: जी सर।

तृतीय सदस्य: आपको उस फलिम की कौन-सी बातें सबसे अच्छी लगी?

वपुल: चार्ली चैप्लिन की एक्टिंग, जोकर का चरित्र और कथानक।

तृतीय सदस्य: 'मेरा नाम जोकर' और 'द सर्कस' में आपको कौन-सी फलिम ज़्यादा अच्छी लगी?

वपुल: वैसे तो दोनों ही अच्छे हैं और दोनों की विशेषताएँ अलग-अलग हैं। परंतु दोनों के दुःख अनूठे हैं।

तृतीय सदस्य: अच्छा... (मुसकुराते हैं और फरि चतुर्थ सदस्य से पुनः सवाल पूछने के लिये आग्रह करते हैं।)

चतुर्थ सदस्य: हाल-फलिहाल की कोई फलिम जसिने आपको प्रभावति कयिा हो?

वपुल: जी, वज़ीर।

चतुर्थ सदस्य: वज़ीर की कौन-सी बात आपको सबसे अच्छी लगी?

वपुल: अमतिाभ बचन और फरहान अख्तर की एक्टिंग तथा सधा हुआ कथानक।

चतुर्थ सदस्य: ...और इस फलिम का सबसे कमज़ोर बनिदु।

वपुल: मुझे कुछ नरिदेशन में कमी लगी। आखरि दृश्य में पूरी कहानी के खुलासे की बजाय इसे दर्शकों के वविक पर अगर छोड़ दिया जाता तो यह फलिम को और अधिक प्रभावी बनाता।

चतुर्थ सदस्य: अच्छा... हरेक व्यक्ति की अपनी समीक्षा दृष्टि होती है। आप फलिमों की समीक्षा भी करते हैं?

वपुल: कभी-कभार।

चतुर्थ सदस्य: हमारा समाज फलिमों से प्रभावति होता है या फलिमें समाज से प्रभावति होती है?

वपुल: मुझे लगता है सर कि दोनों को अलग-अलग करके नहीं देखा जा सकता। फिलिमों में समाज से प्रभावित होती हैं और समाज को प्रभावित भी करती हैं?

चतुर्थ सदस्य: और समाज...?

वपुल: समाज भी फिलिमों से प्रभावित होता है और फिलिमों को प्रभावित भी करता है।

चतुर्थ सदस्य: वेरी गुड...

(चतुर्थ सदस्य संतुष्ट नज़र आ रहे हैं। वे अध्यक्ष महोदय से पूछते हैं कि क्या वे कोई अन्य सवाल करना चाहेंगे? अध्यक्ष महोदय नहीं में सर हलियाते हैं।)

अध्यक्ष: ओके... अब आप जा सकते हैं।

वपुल: थैंक्यू सर।

(वपुल उठकर कुर्सी को पुनः यथास्थान रख देता है और अभिवादन करता हुआ बाहर चला जाता है।)

माँक इंटरव्यू का मूल्यांकन

इंटरव्यू में जाने से पूर्व उम्मीदवार तरह-तरह की तैयारियाँ करते हैं। वेश-भूषा कैसी हो; कपड़ों का रंग क्या हो; चश्मा पहनें अथवा नहीं, पहनें तो किस प्रकार का; जूते कैसे पहनें; अभिवादन कैसे करें; हँसी में अभिवादन करें या अंग्रेज़ी में जैसे कई ऊहापोहों के बीच उम्मीदवार तरह-तरह के अभ्यास करता है। परंतु इंटरव्यू के शुरुआती पाँच मिनट के बाद ये सारी बातें गौण हो जाती हैं एवं केवल व्यक्तित्व की अंदरूनी परख शेष रह जाती है। लेकिन फरि भी उम्मीदवार का पहला प्रभाव उसका बाहरी व्यक्तित्व ही निर्धारित करता है, इसलिये सकारात्मक प्रभाव डालने के लिये वेश-भूषा आदि की भी अहम भूमिका होती है। हालाँकि वपुल की वेश-भूषा ठीक थी जो बलिकुल फॉर्मल एवं बनिा किसी चटक-मटक के साधारण और हल्के रंग वाली थी। परंतु उसने स्वयं को और अधिक नखारने के लिये बलेज़र भी पहन रखा था जो मौसम के अनुसार बलिकुल अटपटा लग रहा था। इसलिये इंटरव्यू के शुरुआती दौर में ही वपुल को थोड़ी असहज स्थितियों का सामना करना पड़ा। हालाँकि बाद में वपुल ने अपने आप को संभालते हुए आगे इंटरव्यू को अच्छा मोड़ दिया। इंटरव्यू के दौरान कई बार उसे कुछ विषय स्थितियों का भी सामना करना पड़ा तो कई प्रश्नों पर उसने बेहद शानदार उत्तर भी दिये। आइये विश्लेषण करते हैं कि इंटरव्यू के दौरान कौन-से बनिदु वपुल के पक्ष में रहे तथा कहाँ वे कमज़ोर पड़े-

वपुल के पक्ष में रहे बनिदु

1. किसी भी उम्मीदवार को साक्षात्कार से पूर्व अपने क्षेत्र की सामाजिक-भौगोलिक-आर्थिक विशेषताओं के बारे में वसित्त जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये। इंटरव्यू बोर्ड के सदस्यों को उम्मीदवार से यह अपेक्षा रहती है कि वह कम-से-कम अपने क्षेत्र के बारे में वसित्त जानकारी रखे। वपुल मध्य प्रदेश के उज्जैन ज़िले से संबंधित है, इसलिये उससे उज्जैन से संबंधित कुछ साधारण सवाल पूछे गए। वपुल ने उज्जैन से संबंधित सवालों के सही एवं संतुलित उत्तर दिये जिसने बोर्ड सदस्यों पर अच्छा प्रभाव डाला। वपुल ने नॉर्थ-साउथ-ईस्ट-वेस्ट कॉरीडोर से संबंधित प्रश्नों के भी सही उत्तर दिये जो उसकी सामान्य जानकारी पर पकड़ को दर्शाता है। साथ ही, नॉर्थ-साउथ-ईस्ट-वेस्ट कॉरीडोर की लंबाई के बारे में पता नहीं होने पर उसने वनिम्रतापूर्वक क्षमा मांग ली जो उसके वनिम्र व्यक्तित्व का परचायक है।
2. पैसे और पद में किसी एक को चुनने के सवाल पर वपुल ने पद को चुनने की बात की और इसके पीछे ठोस तर्क भी रखे। वपुल के द्वारा पद को प्राथमिकता दिया जाना वास्तव में उसकी पद के प्रति निष्ठा एवं ईमानदार छवि को दर्शाता है।
3. देश के लिये कुछ करने की बात पर वपुल ने उन समस्याओं का ज़िक्र किया जो वास्तव में हमारे समाज की मूल समस्याएँ हैं। इसके अलावा उसे दूर करने के लिये भी जनि उपायों को उसने बताया वे भी व्यावहारिक थे। साथ ही, इन समस्याओं से लड़ने के लिये वपुल ने अपने व्यक्तिगत प्रयासों की भी बात की जो उसकी सामाजिक दायित्वों के प्रति निष्ठा को दर्शाता है।
4. महिला सदस्य द्वारा कुछ एनजीओ की गतिविधियों पर सवाल उठाए जाने पर वपुल ने जिस प्रकार संतुलित तरीके से इसके सकारात्मक- नकारात्मक पक्षों के बीच एक सम्यक् रास्ता सुझाया वह वाकई सराहनीय था।
5. बी.टेक. करने के बावजूद आई.ए.एस. की तरफ आकर्षित होने के कारण पूछे जाने पर वपुल ने झूठे और बनावटी डींगों की बजाय बेबाक होकर बताया कि वह प्रथमतया इस पद की गरिमा और प्रतिष्ठा को लेकर आकर्षित हुआ। इससे उसकी इमेज एक ईमानदार और स्पष्टवादी उम्मीदवार के रूप में बनती है। हालाँकि इससे उसकी एक स्वकेन्द्रित छवि भी उभरती है जो कनिकारात्मक है परन्तु अपने आगे के उत्तरों से वह अपनी सकारात्मक छवि को स्पष्ट करने में सफल हो जाता है।
6. महिला सदस्य द्वारा यह पूछे जाने पर कि आपकी नज़र में प्रतिष्ठा का क्या अर्थ है, वपुल थोड़ा-सा उलझा परंतु बाद में अपने आपको सही करते हुए उसने समाजशास्त्र के मानकों के आधार पर इसकी संतुलित व्याख्या की जो वाकई प्रभावी था।
7. चूँकि वपुल का वैकल्पिक विषय भूगोल था, इसलिये उससे भूगोल से संबंधित प्रश्न पूछे जाने स्वाभाविक थे। हालाँकि वपुल से पूछे गए प्रश्न विषय के गूढ़ सिद्धांतों पर आधारित न होकर सामान्य संदर्भों से थे जिसकी संतुलित व्याख्या वपुल ने की।

8. भूगोल के संदर्भ में यह विवाद सामान्य रूप से प्रचलित है कि भूगोल मानविकी का वषिय है अथवा वज्जिज्ञान का। यहाँ तक कि कुछ वशिवदियालयों में स्नातक तक इसे मानविकी में रखा जाता है जबकि परास्नातक में वज्जिज्ञान में। हालाँकि इस सवाल पर वपुल थोड़ा-सा वचिलति हुआ और शुरुआत में साधारण प्रकृति के उत्तर दधि जिसे सही नहीं माना जा सकता। परंतु आगे के सवालों पर अपने आपको सही करते हुए उसने भूगोल को आंशिक रूप से मानविकी एवं वज्जिज्ञान में शामिल करने का सुझाव दधि जो तार्किक रूप से सही प्रतीत होता है।

9. यह कोई आवश्यक नहीं कि हर प्रश्न के उत्तर उम्मीदवार को पता ही हो। परन्तु कई बार कुछ नहीं जानने वाले प्रश्नों पर भी सेंस ऑफ ह्यूमर के आधार पर उत्तर दधि जा सकता है। इससे उम्मीदवार की त्वरति समझ का पता चलता है। एथकिल ज्योग्राफी के बारे में वपुल को कोई सैद्धान्तिक जानकारी नहीं थी, परन्तु अपनी त्वरति समझ के द्वारा उसने इसके नाम के आधार पर ही इसका वशिलेषण कर दधि जो व्यावहारिक रूप से सही भी था। वपुल के इस सेंस ऑफ ह्यूमर ने बोर्ड सदस्यों पर अच्छा प्रभाव डाला होगा।

10. वपुल के पूरे इंटरव्यू का सबसे बेहतरीन उत्तर वह रहा जब उससे सफलता के बारे में पूछा गया। सफलता के बारे में उसने अपनी जो राय रखी वह वाकई प्रभावी थी। उसने असफलता को सफलता के विपरीत न बताकर इसे सफलता की एक स्थिति के रूप में बताया जो उसकी सकारात्मक सोच को दर्शाता है।

11. सफलता और ईमानदारी में से कसिी एक को चुनने के सवाल पर जिसे प्रकार वपुल ने तटस्थ होकर ईमानदारी को चुना, वह वाकई वपुल की ईमानदारी, नषिठा एवं सकारात्मक भावुकता का परचायक है।

12. कसिी भी इंटरव्यू में उम्मीदवार से रुचियों के बारे में प्रश्न पूछा जाना अत्यंत स्वाभाविक है। चूँकि वपुल की रुचिफिलिमें देखना थी, इसलधि उससे भी फलिमों से संबंधित कुछ साधारण से सवाल पूछे गए। हालाँकि इन सवालों में कसिी भी प्रकार के गूढ़ तथ्यों से संबंधित कोई सवाल नहीं थे। सारे सवाल साधारण चर्चा के सवाल थे जिनके उत्तर भी वपुल ने सहजता से दधि।

13. 'मेरा नाम जोकर' और 'द सर्कस' की तुलना से संबंधित प्रश्न पूछे जाने पर वपुल ने एकपक्षीय दृष्टिकोण न रखते हुए दोनों को अलग-अलग मामलों में वशिषिट बताया जो उसके सम्यक् दृष्टिकोण का परचायक है।

14. हाल-फलिहाल की फलिम के बारे में पूछे जाने पर वपुल ने 'वज़ीर' का नाम लधि तथा 'वज़ीर' के बारे में अपनी समीक्षा दृष्टि रखी जो व्यावहारिक रूप से सही भी प्रतीत होती है।

15. समाज फलिमों से प्रभावित होता है या फलिमें समाज से प्रभावित होती हैं, के सवाल पर वपुल ने एक अत्यंत संतुलित उत्तर दधि जिसे वाकई बोर्ड सदस्यों को प्रभावित कधि होगा।

वपुल के कमज़ोर बनिदु

1. साकषात्कार में जाने से पूव उम्मीदवार को अपनी वेश-भूषा आदिका सावधानीपूर्वक चयन करना चाहधि। वेश-भूषा ऐसी भी न हो कि उम्मीदवार बलिकुल लुंज-पुंज और लापरवाह सा दखि और वेश-भूषा ऐसी भी नहीं होनी चाहधि जिसे दखिावे का पुट झलकता हो। साथ ही, वेश-भूषा के चयन में मौसम, स्थान व समय का भी ध्यान रखना चाहधि। वपुल का गर्मी के दिनों में बलेज़र पहनकर आना वाकई थोड़ा अटपटा लग रहा था, जिसे कारण उसे कई अटपटे सवालों का सामना करना पड़ा और इस क्रम में वह हँसी का पात्र भी बना। इंटरव्यू के शुरुआती दौर में ही इस प्रकार की स्थितियों का सामना करना अच्छे-अच्छे उम्मीदवारों के मनोबल को भी तोड़ सकता है। वेश-भूषा के चयन में की गई इस भूल को वपुल की एक बड़ी कमज़ोरी के तौर पर देखा जा सकता है।

2. वेश-भूषा के आधार पर व्यक्तित्व की वशिषता आँकने के जिसे तर्क को वपुल ने बोर्ड सदस्यों के सामने रखा, उसमें वास्तव में कोई वशिष दम नहीं था। हालाँकि उसके तर्क को ठीक समझा जा सकता है परंतु वे तर्क प्रभावी नहीं थे जिसेका मज़ाक भी बन गया। साथ ही, केवल व्यक्तित्व अनुभवों के आधार पर आत्मवशिवास के साथ कोई नषिकर्ष देना एक बड़ा दोष माना जाता है। तर्कशास्त्र की भाषा में 'अवैध सामान्यीकरण' का दोष कहा जाता है। एक समझदार उम्मीदवार से ऐसी गलतियाँ नहीं करने की अपेक्षा की जाती है।

3. व्यक्तित्व की वशिषता बताने के सवाल पर वपुल पुनः अत्युक्तिका शकिार नज़र आता है। सामान्य मनोवज्जिज्ञान के अनुसार कोई भी व्यक्तित्वपूर्ण रूप से पॉज़िटिवि या नगिटिवि नहीं हो सकता। परंतु जिसे प्रकार से उसने अपने आपको शत-प्रतशित सकारात्मक घोषित कधि, यह वाकई बचकानेपन का परचायक है। इसी कारण वह आगे चलकर कई शाखित प्रश्नों में उलझा।

4. वपुल के इंटरव्यू के दौरान एक बात जो स्पष्ट मालूम चलती है और वह है उसके अंदर आत्मवशिवास की कमी। यद्यपि उसने अपनी इस कमज़ोरी को स्वीकारा भी, परंतु एक सविलि सेवक के लधि आत्मवशिवास की कमी का होना एक बड़ी कमज़ोरी है। अपनी ही बात पर स्थिर नहीं रह पाना और थोड़ा-सा दबाव बनाने पर अपना मत बदल लेना, वपुल की एक बड़ी कमज़ोरी के तौर पर देखा जा सकता है।

5. कभी-कभी इंटरव्यू की कतिाबें भी उम्मीदवार को भरमा देती हैं क्योंकि इंटरव्यू की तैयारी वाली पुस्तकों में सैद्धान्तिक बातें तो होती हैं, परंतु व्यावहारिकता में उस पर कैसे अमल कधि जाए, इसका कोई सूत्र नहीं होता। वपुल के साथ भी यही हुआ। संभवतः उसने कतिाबों में पढ़ा होगा कि 'सॉरी' बोलने से बोर्ड पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और उसने छोटी-छोटी बात पर 'सॉरी' बोलना शुरु कर दधि जिसेका परिणाम सकारात्मक की बजाय नकारात्मक हुआ क्योंकि कोई भी व्यक्तित्व इतना सॉरी सुनकर परेशान हो जाएगा।

संभावित अंक: 63%

हमारा अनुमान है कविपुल को इस साक्षात्कार के लिये 63% अंक मिलेंगे। यानी 275 में से 174 तथा 200 में से 126.

कुल मलाकर वपुल का इंटरव्यू अच्छा रहा। कुछ छोटी-मोटी गलतियों को अगर छोड़ दिया जाए तो अधिकांश प्रश्नों के उत्तर उसने बेहद संतुलित तरीके से दिये। कुछ स्थानों पर वह वचिलित भी हुआ परंतु कई प्रश्नों के उसने शानदार उत्तर दिये।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/Vipul-kumar>

